गुरुवाणी

जो (आपको) मर्यादा देते हैं, आप उनको भी उतनी ही मर्यादा दें। आपकी तो कोशिश होनी चाहिये कि.....यदि कोई थोड़ी सी मर्यादा भी आपको दे, तो आपकी ओर से जितनी अधिक हो सके आप उसे मर्यादा दें। कोई आपका आदर करता है.....तो इसका अर्थ यह न समझें कि वह बेवकूफ है या वह छोटा है।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१४, अंक २१, वाराणसी। शनिवार १५ नवम्बर २०१४ ई० सहयोग राशि ४.२५

जीने की कला

इस सृष्टि में मानव शरीर को प्रकृति या ईश्वर का सबसे अनुपम उपहार या वरदान कहा गया है, यह सर्वविदित भी है कि जीवन की अवधि एक निर्धारित काल तक ही सीमित है, अब प्रश्न यह उठता है कि इस अल्पकाल का कैसे हम भरपूर सदुपयोग करें ताकि जीवन धन्य हो जाय, हमें शांति, सुख, संतोष की प्राप्ति हो यानि सुखमय समय बीते क्योंकि पल-पल बीतते समय का कोई विकल्प नहीं है। प्रत्येक रात-दिन ऐसे ही बीतता जा रहा है और येन-केन-प्रकारेण अधिकांशतः मनुष्यों का जीवन-यापन चल रहा है परन्तु जो समाज में थोड़े विचारवान प्राणी हैं, वे अवश्य ही इस ओर भी आकृष्ट होते हैं कि जीवन रूपी गाड़ी की गति एवं दिशा-दशा को कैसे समुन्नत करें, जैसेकि एक किसान ही है वह बगल वाले किसान की अपेक्षा कम भूमि को ही उपजाऊ बनाकर अच्छी फसल लेता है जबकि कम मेहनती एवं आलसी किसान अधिक जोत का मालिक होते हुए भी पैदावार नहीं बढ़ा पाता एवं उसका ही अनुकरण उसकी संतति यानी आने वाली पीढ़ियाँ भी करती रहती है, फलस्वरूप अधिकाधिक भूमि के स्वामी होकर भी वह दिनोंदिन गिरावट की ओर अग्रसर हो जाता है, यही खेती औघड़ दरबार में भी अघोर संतों के द्वारा बड़े ही सूझबूझ एवं निराले ढंग से की जाती है एवं उत्कृष्ट उत्पाद या फसल सुनिश्चित की जाती है, क्योंकि अघोर विचार को प्राथमिकता देकर अपने जीवन में अपनाने वाले ऐसे ही किसान फसल हैं, वे ही चन्द सौभाग्यशाली प्राणी जिन्हें माँ गुरु की कृपा अनायास प्राप्त होती है यानी कम भूमि में उत्कृष्ट उत्पादन।

औघड़ संतों ने मानव कल्याण हेतु सदा से सरल बातों से ही कठिन जीवन यात्रा पद्धति को सरल बनाया है तथा उसे अद्भुत साँचे में ढालकर एक सुगम पथ का मार्ग प्रशस्त किया है। वर्तमान समय में पीठाधीश्वर जी की ही संक्षिप्त उक्तियों, सूक्तियों, विचारों पर ही अगर हमारा थोड़ा भी ध्यान हो जाये तो हर घर, परिवार, समाज में समरसता का एक सुखद वातावरण तैयार हो जाय। वर्तमान समय में बड़ी-बड़ी सामाजिक बुराईयों के अलावा छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देकर हम चमत्कारिक परिवर्तन की आशा कर सकते हैं। बशर्ते कि गुरु के निर्देशानुसार प्रत्येक परिवार में सद्भाव बना रहे, अहंकार अथवा छोटी सी अहम की चिंगारी कहीं अच्छे भले सुगठित परिवार को भस्मीभूत न कर दे इसीलिये औघड़ संत पारिवारिक एकता, भाईचारा, आपसी सौहार्द पर विशेष बल देते हैं ताकि अल्प काल के इस जीवन सुख का मानव लाभ ले सके तथा जीवन के अन्त में उसे अपने सन्तानों, भाई, बंधुओं के आचरण को लेकर कोई अफसोस, ग्लानि अथवा पश्चाताप न हो, इससे बचने के लिये हमें स्वयं को ही निरालस्य, पुरुषार्थी एवं वाणी की अपेक्षा अपने आचरण से ही दूसरों के लिए प्रेरणास्त्रोत होने का प्रयत्न करना पड़ेगा, जिससे कि न केवल हमारा जीवन सुखी होगा, बल्कि धर परिवार में भी सुख-शान्ति की अनवरत वर्षा होती रहेगी परन्तु विपरीत आचरण, स्वच्छन्द, मर्यादा रहित जीवन यापन करने एवं मन को अनुशासन में न रख अनियंत्रित कार्य करने से दुःखद परिणाम ही मिलेगा। अब यह विचारणीय प्रश्न है कि हम कैसे इसका क्रियान्वयन अपने जीवन को कैसे साकार करें? क्योंकि लाभ-हानि, सुख-दुःख, दिन-रात की भाँति जीवन का अभिन्न हिस्सा है? ऐसा अभी तक कोई मनुष्य पैदा नहीं हुआ जिसने गलती न की हो या जिसके जीवन में केवल सुख ही सुख यानी मनभावन वातावरण ही बरकरार रहता हो, अस्तु जीवन के आसन्न, अपरिहार्य परिस्थितियों को यदि हम निकट से सामना को तैयार रहें; अपने सद्भावों को, सुविचारों को अपने पर ईमानदारी से लागू करें तो कोई कारण नहीं कि हम समस्याओं से न उबर जाय, गुरु की कृपा सदैव भक्तों पर बरबस बरसती रहती है, बस आवश्यकता है अपने को दृढ़ बनाये रखने का उस रटन्तू तोता की स्थिति में हम न रहे जो रात-दिन भजन की आवाज निकालता था जैसे उसके रोम-रोम में परमात्मा का निवास हो गया हो एवं अभय की स्थिति को प्राप्त हो, परन्तु जैसे ही उसका सामना बिल्ली से होता हो वह राम-नाम छोड़कर टाँय-टाँय करने लगे, इसी को कथनी एवं करनी में अन्तर कहते है, पर उपदेश हम दूसरों की समस्या के समाधान अथवा निराकरण हेतु देने को उद्यत रहते हैं परन्तु वैसी समस्या स्वयं पर आ पड़े तो निराशा की भावना तुरन्त घर कर लेती है एवं सारा ज्ञान काफूर हो जाता है, इसके विपरीत यदि हम अपने इष्ट पर भरोसा मन कर्म एवं वचन से करे तो बड़ी सी बड़ी बाधा में भी विचलित नहीं कर पायेगी तथा सांसारिक आग में हम झुलस नहीं पायेंगे बल्कि और दमकते हुए बाहर होंगे बशर्ते कि हमारी आराधना, समाज से, मानव से प्रेम, साहचर्य दिखावटी न हो बल्कि वास्तव में वह हृदयस्पर्शी हो एवं उसमें ईमानदारी की सुगन्ध बिखरती हो अपना वातावरण, शारीरिक बनावट, स्थिति, परिस्थिति का उतना महत्व नहीं है जितना महत्व अपने अन्दर से उपजे साहस, उल्लास एवं ईमानदारी का होता है।

यदि किसी व्यक्ति ने हमारे साथ अपने स्वाभावानुसार उचित व्यवहार नहीं किया अथवा कटु वचन से हमें आहत भी कर दिया तो उसे स्थायी रूप से मन में जमने नहीं देना चाहिए, जैसे जल में तैरती हुई दो बत्तकें अचानक लड़ पड़ती हैं तथा दूसरे ही क्षण पंख झाड़कर तनाव से विरत होकर अपने-अपने कार्य में पूर्व की भाँति मशगूल हो जाती है जैसे कुछ हुआ ही न हो क्योंकि यदि हम छोटी-छोटी बातों में उलझें रहेंगे तो इस अल्प जीवन का आनन्द नहीं ले पायेंगे एवं गिरावट की ओर अग्रसर होने लगेंगे। अघोर पथ में इसीलिये अधिक सत्संग अथवा दिखावटी तड़क-भड़क के साथ उपदेश की झड़ी नहीं लगायी जाती बल्कि मात्र बातचीत होती है, संवाद होता है एवं व्यवहारिक ज्ञान को ही सुदृढ़ बनाया जाता है ताकि मानव हर स्थिति में अपने को सामान्य बनाये रहे एवं आनन्द से ओतप्रोत रहे। औघड़ अघोरेश्वरों की छोटी-छोटी बातें अत्यन्त प्रभावकारी होता है तथा मनुष्यों को उत्कृष्टता की ओर निरन्तर अग्रसर करती रहती है। साथ ही अपने दायित्वों, कर्तव्यों के प्रति हर अघोर के अनुयायी को अत्यधिक सतर्क भी किया जाता है जिससे लेशमात्र भी आरामतलबी, आलस्य का समावेश उसके जीवन में न हो सके। बड़े सरकार यानी भगवान अवधूत रामजी मातृ-पितृ, सामाजिक ऋण के साथ ही राष्ट्र ऋण से भी उऋण होने के दायित्व को याद दिलाया करते थे, पोंगापंथी बनकर जीवन-यापन करने वाले लोग आलसी (पृथ्वी के भार) की ही श्रेणी में आते हैं, जिन्हें अन्ततोगत्वा कुछ हासिल नहीं होता एवं अमूल्य जीवन नर्क में ही बीत जाता है। राष्ट्र दायित्व के महत्व को दर्शाते हुए अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन ने भी कहा था कि "आप यह देखे कि आपने

शेष पृष्ठ दो पर

सेवा ही महान पूजा है

परम पूज्य अघोरेश्वर का संदेश

प्रिय धर्मबन्धुओं!

''जीवन का यदि कोई बहुमूल्य कर्त्तव्य है तो वह सेवा है। सेवा हम चाहे जिस किसी भी करें। यदि किसी परिचित की सेवा करते हैं अपने ग्राम, कुटुम्ब, चाचा, मामा आदि की सेवा करते हैं तो वह हमारे ही विचारों से ओत-प्रोत, हमारे ही आत्मा के प्रकाश, देवता की सेवा हैं और यदि किसी अपरिचित की सेवा कर देते हैं तो वह ईश्वर की सेवा के तुल्य है। इसलिये हम निवेदन करेंगे कि आप परिचित साथ संग रहने वाले सभी की सेवा करें। इससे अपनी आत्मा के उत्थान में महान सहयोग होगा।''

हर मनुष्य को सेवा की भावना रखनी चाहिए, क्योंकि मनुष्य के लिए सेवा एक भक्तिमय जीवन है। हम सभी को सेवा करने का समय मिला है। इस थोड़े से समय में अपने जीवन के लिए सेवा करना आवश्यक है। अगर हम दूसरों की सेवा करते हैं तो हमारी उस सेवा का फल भगवान अवश्य ही देंगे। परन्तु मनुष्य यह नहीं सोचते। दु:खित-पीड़ित की सेवा करना पसंद नहीं करते हैं। वे सोचते हैं कि उस गरीब से, उस पीड़ित से हमें क्या फायदा है। किसी अमीर व्यक्ति से हमें क्या फायदा है। किसी अमीर व्यक्ति की सेवा सत्कार करेंगे तो वह हमको मौका पर रुपये पैसे से मदद कर सकता है।

हमको हर जीव पर दया एवं सेवा का भाव रखना चाहिए। चाहे वह मित्र हो या शत्रु ही क्यों न हो। हम किसी भूखे, गरीब की सेवा करते हैं तो उसके मुँह से बहुत बड़ी दुआ मिलती है। उन भूखे गरीब के मुँह से कभी भी बद्दुआ नहीं मिलती। पूज्य अघोरेश्वर की वाणी है- जो भगवान के राह पर एक दाना खर्च करता है तो उसे सौ दाना मिलता है। लेकिन हर मनुष्य ऐसा नहीं समझते हैं। परन्तु यह सत्य है कि समाज में दु:खित, पीड़ित और गरीबों की सेवा करना भगवान की सेवा है। चूँकि सेवा कर्म से जुड़ी है, हम आज जैसा कर्म करेंगे, कल उसी प्रकार का फल हमें मिलेगा। पूज्य अघोरेश्वर ने कहा है- आज का कर्म, कल का भविष्य। अगर हम चोरी करते हैं तो हमें चोरी का ही फल मिलेगा।

आज हमें जिससे डर भय है, उससे तो डरते ही नहीं है। हमको भगवान से डर, भय करना चाहिए। परन्तु मनुष्य सोचते हैं कि भगवान तो देखते नहीं है? मनुष्य होकर मनुष्य से ही डरते है। मनुष्य से छिप करके गलत काम करने लगते हैं। परन्तु मनुष्य नहीं देखते है। भगवान तो अवश्य ही देखते हैं कि क्या करते हैं, क्या नहीं करते हैं। चाहे सात दरवाजे के भीतर चोरी करें या बाहर करें। भगवान हर जगह देखते हैं और उस कर्म का परिणाम अवश्य ही भोगते हैं और उस कर्म का परिणाम अवश्य ही भोगते हैं। चाहे जिस रूप में भोगे, भोगना ही पड़ेगा। इसलिए भगवान पर पूर्ण भरोसा करना चाहिए। अगर भगवान मानते हैं तो भगवान हर जगह है। हर रूप में है, चाहे मनुष्य के रूप में हो या देवता के रूप में हो।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–neenad@aghorpeeth.org
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

जीने की कला

अपने राष्ट्र को क्या दिया? अपेक्षा इसके कि राष्ट्र ने आपको क्या दिया?'' इससे आपके अन्दर आत्मशक्ति, स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता आयेगी। आज स्वयं में ही परिपूर्ण रहेंगे तथा जीवन के अवसान के पूर्व ही आप राष्ट्र ऋण से ही उऋण हो जायेंगे तथा परिवार, समाज को एक सीख देकर ही संतुष्ट होंगे अन्यथा ''अब पछताये होत का जो चिड़िया चुग गयी खेत।''

अस्तु जो भी दायित्व कार्य हमें अघोरेश्वर ने प्रदान किया है उस दायित्व का अनुपालन हम बखूबी कर सकें, किंचित लेशमात्र भी शिथिलता अथवा विचलन का भाव मन में प्रविष्ट न करने पाये सबसे बड़ी साधना यही है, वरना इस क्षणभंगुर परन्तु दीर्घायु जीवन तत्व के सौभाग्य एवं आनन्द से हम वंचित रह जायेंगे। अत: सतर्क रहकर इस पर भी गौर करें कि—

बहुत गई थोड़ी रही नारायण अब चेत।
कालचिरैया चुग रही निसदिन आयु खेत॥

राम नाम की महिमा

श्रीभगवान् के रूप, लीला और गुणों की भाँति ही उनका नाम भी अप्राकृत और चिदानन्दमय है। नाम अलौकिक शक्ति-सम्पन्न हैं नाम के प्रभाव से ऐश्वर्य, मोक्ष और भगवत्प्रेम तक की प्राप्ति हो सकती है। नामाभास को छोड़कर गुरुप्रदत्त शक्ति से सम्पन्न नामका यदि विधिपूर्वक अभ्यास किया जाय तो उससे जीव के सभी पुरुषार्थ सिद्ध हो सकते हैं। नाम के जाग्रत् होने पर उसके प्रभाव से सद्गुरु की प्राप्ति और तदनन्तर सद्गुरु से इष्ट मन्त्ररूपी विशुद्ध बीज की प्राप्ति हो सकती है।

तुलसी मेटैं रूप निज विंदु सीय को रूप।
देखि लखै सीता हिये राघव रेफ अनूप॥
तुलसी जो तजि सीय को विंदु रेफ में चाहु।
तौ कुम्भी महँ कल्पशत जाहु जाहु परि जाहु॥

अतएव जो रामनाम के रसिक हैं, वे अर्धचन्द्र-बिन्दु और रेफको एक कर डालते हैं, पृथक् नहीं होने देते। इस एक में ही उनके आस्वादन के लिये अचिंत्य विचित्र लीलाएँ स्फुटित हो उठती हैं।

बीज के क्रम-विकास से चैतन्य की अभिव्यक्ति होती है और देह एवं मन की सारी मलिनता दूर होकर सिद्धावस्था का उदय हो जाता है। मन्त्रसिद्धि वस्तुत: भूतशुद्धि और चित्तशुद्धि के फलस्वरूप होती है। इस अवस्था में स्वभाव की प्राप्ति हो जाती है, इसलिये समस्त अभावों की निवृत्ति हो जाती है। यद्यपि यह अवस्था सिद्धावस्था के अन्तर्गत मानी जाती है, परन्तु यही भगवद्भजन की प्रारम्भिक अवस्था है। माता के गर्भ से उत्पन्न मलिन देह से यथार्थ भगवद्भजन नहीं होता। इसलिये और राजमार्ग के भवद्भजन की सुलभता के लिये मायिक अशुद्ध देह के उच्च स्तर पर भावदेह की अभिव्यक्ति आवश्यक होती है। भावदेह में जो भजन होता है, वह स्वभाव का भजन होता है, वह विधि मार्ग की नियमबद्ध उपासना नहीं है। मन्त्र-चैतन्य के बाद, विधिमार्ग की कोई सार्थकता नहीं रह जाती।

भक्त के भावदेह के विकास के साथ-साथ उसकी भाव-रञ्जित दृष्टि के सम्मुख इष्ट देवता का ज्योतिर्मय-धाम अपने आप ही प्रस्फुटित हो जाता है। इसके पश्चात् भजन के प्रभाव से भावरूपा भक्ति के प्रेमभक्ति में परिणत होने पर पूर्ववर्णित ज्योतिर्मय धाम में इष्ट देवता का स्वरूप प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगता है। यही प्रेम की अवस्था है। इसके बाद भक्त और उसके इष्ट की पृथक् सत्ता विगलित होकर दोनों के एकीभूत हो जाने पर रस की अभिव्यक्ति होती है। यही अद्वैत अवस्था है। इसी अवस्था में भक्त के स्थायी भाव के अनुरूप अनन्त प्रकार की नित्य लीलाओं का अविर्भाव हुआ करता है। यही भक्ति-साधना की सिद्धावस्था है।

श्रीभगवान् का नाम इस प्रकार रस के स्वरूप में अपने को प्रकट करता है। श्रीरामनाम श्रीभगवान् का एक विशिष्ट नाम है। इसकी महिमा अनन्त है। शास्त्रों ने इसी को 'तारक-ब्रह्म' कहा है। यह प्रणव से अभिन्न है, इस बात को भी ऋषि-मुनियों ने बार-बार बतलाया है। कहा जाता है कि परम भागवत श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी को देह त्याग के कुछ दिनों पूर्व अलौकिक भाव से श्रीमन्महावीर जी ने राम नाम का रहस्य बतलाया था। उन्होंने कहा कि विश्लेषण करने पर राम-नाम में पाँच अवयव या कलाओं की प्राप्ति होती है। इनमें प्रथम का नाम 'तारक' है और पिछले चारों नाम क्रमश:-'दण्डक' 'कुण्डल' 'अर्धचन्द्र' और 'बिन्दु' हैं। मनुष्य स्थूल, सूक्ष्म और कारण देह को लेकर इस मायिक जगत् में विचरण करता रहता है। जब तक माया का भेद नहीं होता, तब तक महाकारण-देह की प्राप्ति नहीं हो सकती। साधक को गुरूपदिष्ट क्रम के अनुसार स्थूल-देह के समस्त तत्त्वों को नाम के प्रथम अवयव 'तारक' में लीन करना पड़ता है। स्थूल देह एवं अन्यान्य तीनों देह पाञ्चभौतिक हैं। स्थूल में अस्थि, त्वक् आदि पाँच पृथ्वी के, मेद, रक्त, रेत: आदि पाँच जलके, क्षुधा, तृष्णा आदि पाँच तेज के; दौड़ना, चलना आदि पाँच वायु के; काम, क्रोध, लोभ आदि पाँच आकाश के कार्य हैं। अन्य तीनों देहों में ही इसी प्रकार पंचभूतों के अंश हैं। प्रत्येक तत्त्व की पाँच प्रकृति होती है। इसी से स्थूल देह में पाँच तत्त्वों की पच्चीस प्रकृति हैं। इसी प्रकार अन्य तीनों देहों में पच्चीस प्रकृति हैं।

शेष अगले अंक में

अघोर निष्ठा

संत प्रवर तुलसीदास जी काशी में बाबा कीनाराम के समकालीन थे एवं बाबा कीनाराम जी की सद्प्रेरणा सदैव प्राप्त किया करते थे, साथ ही क्रींकुण्ड स्थल में उन्हें साक्षात् सीताराम एवं हनुमान जी के साक्षात् दर्शन का भी सौभाग्य बाबा कीनाराम की ही कृपा से उन्हें प्राप्त भी हुआ था। यहाँ तक कि श्रीरामचरित मानस की रचना का भी श्रेय तुलसीदास जी को बाबा के ही अनन्य आशीर्वाद से प्राप्त हुआ था एवं तुलसीदास जी औघड़ को अवढर कहते हैं तथा साक्षात रुद्र यानी शिवस्वरूप मानते हैं तभी तो कहते हैं—

सुनहूँ भरत भावी प्रबल विलख कहहूँ मुनि नाथ।
हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ॥

संत के कहने का तात्पर्य यह है कि संसार में हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश ये छः ऐसी विकट स्थितियाँ है कि जिस पर मानव का वश नहीं है, ये सभी विधानानुसार है, यानी विधि के नियंत्रण में है एवं जो होना बदा है वह होकर ही रहेगा, तभी तो इसे स्पष्ट करते हुए कबीर दास जी ने और पूर्व में ही इसकी उद्घोषणा की थी कि—कहत कबीर सुनो भाई साधो

होनि होके रही, मुनि वशिष्ठ से पंडित ज्ञानी, शोधि के लगन धरी।
सीता हरण, मरण दशरथ को वन में विपति परी॥

यानी सभी सतर्कता के पश्चात् भी जो बदा था वही सब हुआ परन्तु जैसे किसी के पास कोई विशेषाधिकार यानी वीटो पावर अन्तर्निहित होता है उसी को प्रकट करते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि "**भावहीं मेटि सकहीं त्रिपुरारी**" यानी ब्रह्मा के लकीर को मेटने, बदलने, परिवर्तित, परिवर्धित करने का विशेषाधिकार अपवाद स्वरूप केवल सदाशिव भोले भण्डारी को ही प्राप्त है जो मानव के रूप में सच्चे औघड़ संतों के रूप में धरा पर जनकल्याण हेतु विद्यमान रहते हैं, यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि सदाशिव को किसी एक रूप, सूक्ष्म या स्थूल रूप तक में सीमित नहीं किया जा सकता, परन्तु जिस प्रकार भूगोलवेत्ता एक ग्लोब की परिकल्पना करके सम्पूर्ण पृथ्वी रूपी ग्रह को दर्शा देते हैं, उसी प्रकार औघड़ संत के रूप में सदाशिव सदा से ही मानव रूप में अवतरित हो, सबको त्राण देने हेतु अत्याचार, अन्याय, सामाजिक कुरीतियों का हनन करते रहते हैं, जिससे कि सामान्य मानव एक भीषण पीड़ा से मुक्ति पाता है एवं एक अपूर्व सुख का अनुभव करता है, इसी को गीता में श्रीकृष्ण के द्वारा भी—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे॥

इसी तथ्य को महाकवि तुलसीदास जी भी कहते हैं कि—

जब-जब होहीं धरम कै हानि
बाढहि असुर महा अभिमानि
करहीं अनीति जाहीं नहीं बरनी
सीदहीं-विप्र-धेनु सूर-धरनी
तब तब प्रभु धरी मनुज शरीरा
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा

यानी सर्वशक्तिमान ही विविध प्रकार से पीड़ा को हरने के लिए विभिन्न आकृति एवं रूप में विराजते हैं एवं समय काल के अनुसार अपने नाम एवं कार्य में तद्नुसार परिवर्तन भी करते हैं परन्तु उनका ध्येय सदा से सर्वकल्याण का ही होता है चाहे वे माध्यम किसी व्यक्ति, समूह, समाज या व्यक्ति को ही बनावें जब तक मानव एक शरीर में आत्मा को धारण करता है यानी परमात्मा का ही वह प्रतिनिधि अंशभूत बनकर पृथ्वी पर अपने प्रारब्धानुसार भोग को जन्म-मृत्यु के मध्य भोगता है, परन्तु इसमें असुरता का खलल विधि को ही मान्य नहीं है, तभी तो अपने अज्ञात अलौकिक रूप को ही साकार कर साक्षात औघड़ संत बनकर पतितों का, ऋषियों का, सज्जनों का, कर्मशील मानवों की रक्षा एवं उद्धार करते हैं तथा उन्हें हर प्रकार से सबल बनाकर कर्तव्य पथ पर आरूढ़ करते हैं तथा अन्ततः दुरात्माओं का खात्मा करना ही इनका उद्देश्य होता है, परन्तु यह केवल औघड़ संत के माध्यम से संभव है जिसे व्याख्यापित करते हुए औघड़ दानी या शिवस्वरूप माना गया है।

हर हर महादेव

देवी-दीपावली (क्रींकुण्ड स्थल)

क्रींकुण्ड खूब सजा धामों का धाम था।
देव-दीपावली दृश्य नयनाभिराम था।।
भव्य सिंहद्वार पर ज्योर्तिमय पुकार था।
खुला दरबार दिव्य औघड़ का द्वार था।।
कतारबद्ध दीपों से मार्ग भी प्रशस्त था।
प्रत्येक कीनारामी सेवक स्वयं सिद्धहस्त था।।
बाये जगमग सिद्धपीठ शान्ति के नाम था।
देव-दीपावली दृश्य नयनाभिराम था।।
बारादारी में ॐ और स्वास्तिक प्रदीप्त था।
मानव कल्याण हेतु औघड़ का दीप था।।
बोधि-कल्प वटवृक्ष सजे-धजे व्यस्त थे।
समाधि की सजावट में जले दीप मस्त थे।।
हर दीपक गुनगुनाता जय हो कीनाराम था।
देव-दीपावली दृश्य नयनाभिराम था।।
प्रांगण के दीपों ने लौ को मिलाया था।
आरती में सबके साथ शीश को झुकाया था।।
घड़ी घंट शंख-ध्वनि लगा चार चाँद था।
समवेत जयकारे में औघड़ निनाद था।।
यादगार शाम रही बड़ा धूमधाम था।
देव-दीपावली दृश्य नयनाभिराम था।।
कूट-दंत, बड़े सरकार दीपों से युक्त थे।
चहल-पहल भ्रमण को भक्त अवमुक्त थे।।
अघोर गणेश कालू टीला सभी दीप्यमान थे।
चप्पा-चप्पा स्थल के स्वयं प्रकाशमान थे।।
पूर्ण अवधि जला दिया न लिया विश्राम था।
देव-दीपावली दृश्य नयनाभिराम था।।

२५ हजार जगमगाते दीयों से कीनाराम की अर्चना

क्रींकुण्ड स्थल में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी देव दीपावली पर्व (कार्तिक पूर्णिमा) यानी छः नवम्बर 2014 को बड़े ही धूमधाम एवं उत्साह से मनाया गया।

पुराणों में उद्धृत है कि त्रिपुरासुर नामक दुर्दान्त असुर का वध शिव द्वारा किये जाने एवं समस्त लोकों को त्राण प्रदान करने के उपलक्ष्य में यह देव-दीपावली पर्व मनाया जाता है एवं काशी के घाटों पर भी इस अवसर पर जलते हजारों दीपों के नयनाभिराम दृश्य को देखने हजारों हजार की संख्या में स्थानीय दर्शकों के अलावा देशी-विदेशी सैलानियों की भी काफी संख्या रहती है।

इस वर्ष 25 हजार मिट्टी के दीयों से सम्पूर्ण स्थल परिसर जगमगा उठा। बारादरी से लेकर बाबा कीनाराम की समाधि तक क्रमबद्ध कतारबद्ध दीपों की शोभा देखते ही बनती थी। मुख्य सिंह द्वार को भी विद्युत झालरों से सजाया गया था, जो बरस श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहा था। बारादरी के साथ ही प्रांगण परिसर में भी आकर्षक ढंग से परिसर में उपस्थित बालक-बालिकाओं, स्वयं सेवकों द्वारा बड़े ही तन्मयता से ॐ एवं स्वास्तिक को स्थान-स्थान पर प्रकाशित दीयों से जीवन्त किया गया था एवं पूरा स्थल परिसर भक्तों एवं श्रद्धालुओं के दर्शन-पूजन के उत्साह में वृद्धि कर रहा था। बड़े सरकार यानी भगवान अवधूत राम जी की निर्माणाधीन समाधि से लेकर प्रत्येक समाधियों को दीप-यज्ञ से परिपूर्ण किया गया था, क्रींकुण्ड सरोवर के चारों ओर प्रदीप्त दीपों ने जैसे दिव्य नेकलेश धारण करा दिया हो एवं मध्य कुण्ड में बाबा कीनाराम की अभय मुद्रा में मूर्ति के चारों ओर वृत्त में जगमगाते दीपों की शोभा देखते ही बनती थी।

स्थल परिसर के पादपों को भी विद्युत झालरों से सजाकर देवदीपावली को साकार किया गया था। यद्यपि काशी के हृदय-स्थल केदार खण्ड में अवस्थित बाबा कीनाराम स्थल पर आयोजित इस दीप-त्योहार की झाँकी लेने की तैयारी सपरिवार श्रद्धालुगण पूर्व से ही किये रहते हैं। इस प्रकार रात्रि लगभग 1 बजे तक श्रद्धालुओं एवं भक्तों ने इस पुनीत अवसर पर दर्शन-पूजन कर अपने को कृतार्थ किया।

भय दुःख का घर है

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

पिछले अंक का शेष

धर्म बन्धुओं!

तो इस तरह से आप जो मन्त्र जपते हैं, शब्द का उच्चारण करते हैं इस तरह का रोमांच होता है, जिस वक्त हृदय में उल्लास आता है उस वक्त का जो समय है, जिस समय आप कहते हैं कि देवी का प्राकट्य हुआ है। ये सब गुण तभी आयेंगे जब मन्त्रों के साथ विश्वास देंगे। मंत्र का मतलब विश्वास है, वह शब्द विश्वास है। आप विश्वास दे रहे हैं। आपकी प्रेरणा आपकी जो युक्ति है, आपकी तरफ से जो संकेत है, निश्चय ही उसका पालन करूँगा, निश्चय ही उसका सेवन करूँगा, निश्चय ही उस तरह से चलूँगा, इसका शपथ ले रहे हैं। इस तरह से हमारे ऊपर कृपा होनी चाहिए, हमारे ऊपर आपकी दया होनी चाहिए, अनुग्रह होनी चाहिए हम आपकी कृपा को पाकर, आपके संकेत को पाकर सभी कार्य करने में सुगमता करेंगे। हम सभी कार्य करते रहेंगे।

ऐसा विश्वास देवी को देकर नहीं पाते तो बहुत से मनुष्य अपने से घृणा करने लगते हैं। उनको अपने से ही घृणा हो जाती है तो कट जाते हैं, डूब जाते हैं, मर जाते हैं, आत्मघात कर जाते हैं, क्या कारण है? देखते हैं बहुत से मनुष्य ईर्ष्या कर बैठते हैं। अपने में ईर्ष्या कर बैठते हैं। अपने पुत्र पौत्र से ईर्ष्या हो जाती है। इस तरह जो हममें उत्पन्न होता है जो हममें है नहीं, हो जाता है, अपने में आता है, होता है वह अवश्य बिगड़ेगा, नष्ट होगा। यदि हममें बनता है, होता है तो वह नष्ट हो सकता है। इसलिए हम क्यों इन वस्तुओं के आश्रित हो। इन क्रिया-कलापों के क्यों आश्रित हो। इसी ध्येय से, इसी कारण से इनका (देवी का) चिन्तन करते हैं और ये बड़ी ही दयालु हैं।

ऐसे तो माता बड़ी स्नेहमय होती है। माता बड़ी ही दयालु होती हैं उसकी दया तो हुई हैं। उसका स्नेह तो हैं ही। लौकिक माता के लिए आप लोगों से एक रोज मैं कहा था लौकिक जो माता होती है जो इस शरीर को पैदा करती है, इसका भी इस शरीर पर बड़ी ही करुणा होती है। एक वेश्यागामी पुरुष था। उससे वेश्या ने कहा कि अपनी माता का सर काटकर ले आओ तो हम जाने कि तुम मुझसे प्रेम करते हो, हमारे भक्त हो। वह अपनी माँ का सर काटकर ले चला तो रास्ते में ठोकर लगने से गिर पड़ा। उस माँ के कटे सिर से आवाज आई कि बेटा तुम्हें चोट तो नहीं लगी। तो माता का हृदय ऐसा होता है कि पुत्र उसको इस अवस्था में पहुँचा देता है तब भी कहती है कि कहीं तुम्हें चोट नहीं लगी है। उसका बड़ा हृदय है। बड़ी दयालु है। जब लौकिक माताओं का इस तरह से श्रद्धा और स्नेह रहता है जो इस शरीर को पैदा की है तो उस पारलौकिक माँ का जो सबको पैदा की है कितना स्नेह होगा। इसलिए आप उनके पुत्र बनिये। आप माता का ही पुत्र बने दूसरे तीसरे का नहीं।

आप उसका स्नेह कैसे प्राप्त कर सकते हैं? आप उनके ही बनें। आपका मैं पुत्र हूँ। आपकी प्रेरणा चाहता हूँ कि मैं आपके संकेतों आपके बनाये हुए मार्गों पर चलूँगा और आपके जो शुभचिन्तक हैं उनका मैं सेवन करूँगा। इस तरह की जब भावना रहती है तभी मनुष्य उस गुण को, उस ज्ञान को, उस तल को प्राप्त करता है और फिर प्राप्त करने पर सदैव उसको आनन्द ही आनन्द भासता है। जहाँ बैठता है, उसको सदा सुख ही सुख रहता है। सदा भाव ही भाव रहता है। कहीं अभाव और कुभाव नहीं होता तथा अभाव तो उन्हीं को खटकता है जो ईर्ष्यालु हैं। जिसमें नाना प्रकार की दुर्भावनायें हैं उन्हीं को खटकता है।

पवित्र गुण जो है उसे थोड़ा सा चिन्तन करने से थोड़ा ना परिश्रम करने से अपने व्यवहार में उतार सकते हैं और आनन्द से अपने जीवन को बीता सकते हैं। वास्तविक जो मनुष्य का जीवन है, वास्तविक जो एक शताब्दी के अन्दर बीतने वाला है, एक अच्छे तरीके से बीत सकता है। नहीं तो फिर वासना के मुताबिक किन-किन योनियों में आयेगा, किधर को जायेगा, कहाँ-कहाँ भटेगा, कहाँ जायेगा, तो हमलोगों की जो अपनी उपासना है, अपना चिन्तन है, अपना मनन है, जिसे हम करते हैं जिनमें दत्त चित्त है जिस समय, वही हमारा प्राकट्य है अपने शरीर में देवी का ऐसा नहीं होता है तो ऐसे मनुष्यों को कपड़ा निचोड़ने जैसे मन फीका हो जाता है। सब ही व्यर्थ मालूम पड़ता है। निरर्थक मालूम पड़ता है। स्त्री-बन्धु-बान्धव कुटुम्ब सब व्यर्थ सा मालूम पड़ता है। कभी-कभी ऐसा मन पर प्रभाव पड़ता है।

हृदय जो है कपड़े निचोड़ने जैसा क्यों हो जाता है। क्यों गतिविधि हैं जो इस तरह का मन हो जाता है ये सब अपनी कमजोरी है। अपनी कमी है। वही अपना भय है। इस तरह के गुण जो है नीचे की तरफ गिराते हैं, उठने नहीं देते। जो हमको उठने नहीं देता है उन गुणों का हम चिन्तन न करें, मनन न करें, स्मरण न करें। अपना पूर्व कृत कर्म जो भूत हो गया है उसका हम चिन्तन न करें। क्योंकि भूत बड़ा सताता है। परेशान करता है और वह सबों को लगा हुआ है। हमलोग जब भी पीछे की ओर घूमकर देखेंगे, वह भूत जो है परेशान करेगा इसलिए कहा गया है कि जबसे सूझे तब से बूझे। जब से ही समझ में आ जाय तभी से वर्तमान में करने लगे। भविष्य तो हमारा आयेगा ही। अच्छा से अच्छा ही हो। भूत को एकदम परित्याग करें। क्योंकि जहाँ भी अपने पूर्वकृत कर्मों का अपने परित्याग किया है, भला बुरा किया है, तभी अपनी परिस्थितियाँ, अपनी उलझने मस्तिष्क में आकर खड़ी हो जायेगी और भयभीत कर देगी। लज्जा पैदा कर देगी और अपना जीवन गर्दिशमय हो जायेगी। इसलिए मैं कहूँगा कि घूमकर, मुड़कर मत देखो किये हुए कर्मों को चाहे वह भला हो या बुरा हो, वर्तमान में हमें क्या करना है भविष्य के हम पुजारी बनेंगे। भविष्य हमारे लिए अच्छा देवता बनेगा।

यह सब जो गुण हैं उसे व्यवहार में लाना है। कोई ज्यादा झंझट नहीं, कोई ज्यादा तूल नहीं। मामूली तरीका से लाना है। सब साधारण चीज है। भगवती की प्रार्थना और आराधना देखिये न वैष्णव लोग भी पहले 'त्वमेव माता च पिता' कहकर स्तुति करते हैं। यह मातृत्व उपासना है जो महान और श्रेष्ठ वस्तु है। ऐश्वर्य को चाहने वाला व्यक्ति को ऐश्वर्य भी नहीं मिलता और ईश्वर भी नहीं मिलता। जो ईश्वर की उपासना करते रहते हैं, ईश्वर उपासना में लगे हुए हैं उनको ऐश्वर्य भी मिल जाता है। ईश्वर तो हमारे हिस्सा में है ही। ऐश्वर्य से और ईश्वर से बड़ी दूरी है। हम जो अपना चिन्तन करते हैं। ख्याल करते हैं स्मरण करते हैं उसे हम देवी का प्राकट्य आविर्भाव समझें। सबसे सुगम और सरल, सही यही है कि आप पंचशील का सीधा सीधा सेवन करें। आप इन्द्रियों के लोभ पर पाबन्दी लगायें। यह नहीं कह रहा हूँ कि उसको एकदम ही बन्द कर दें।

ॐ माँ गुरु

बाबा गौतम राम मालिक गौतम राम
हर एक प्राणी का हो कल्याण-२
किरपा तुम्हारी अहर्निश बरसे,
व्याकुल मन दरशन को तरसे,
अब दे दो अवधूत वरदान
बाबा गौतम राम! मालिक गौतम राम!!
हर एक प्राणी का हो कल्याण-२

कीनाराम के रूप में आये,
हर प्राणी को धन्य बनाये,
निर्बल अबल के रक्षक आप,
जन्म-जन्म का मिट जाये पाप,
जन-जन को मिल जाता त्राण,
दया बरसती सुबहोशाम
बाबा गौतम राम मालिक गौतम राम

अघोर सूत्र

- अधिकतम जिस देश में ब्रह्मवादी, राष्ट्रवादी, समाजवादी, अवसरवादी और नेता होते हैं वह देश की ईश्वर ही रक्षा करें।
- दुःखाग्नि से हर व्यक्ति दग्ध है अपने स्वयं के शरण के सिवाय कहीं शीतलता नहीं है।
- रहस्य राह में है न कि घर में।
- जीवन की सबसे बड़ी साधना सदाचार का अपने व्यवहारों में एकीकरण कर लेना है। इससे भौतिक सुखों की प्राप्ति के साथ ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है।
- ईश्वर गृह त्याग, तप तथा एकान्त के यातना युक्त साधना, व्रत, योग इत्यादि रास्ते से ही प्राप्त नहीं होता बल्कि गृहस्थ जीवन में रहकर भी बिना किसी साधना के प्राप्त होता है और यह एकमात्र साधना आत्मा की पवित्रता है।

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी